ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

भारतीय हिन्दू संस्कृति व समाज में प्राणी जैव विविधता संरक्षण के निहितार्थ

सारांश

भारतवर्ष में प्राचीन समय से ही जैव विविधता संरक्षण का इतिहास रहा है। प्राचीन साहित्य से लेकर वर्तमान समय में पुस्तकों तक समाज में प्राणी संरक्षण सदैव ही मुख्यधारा में रहा है। हिंदू धर्म के विभिन्न देवी देवताओं के वाहन स्वरूप होने के अलावा कई देवी देवता पशु स्वरूप में ही चित्रित किए गए हैं, जिसका उद्देश्य यह संदेश दिया जाना है कि प्राणी संरक्षण सदैव व्यक्ति की प्राथमिकता में रहे। शेर, गाय, बकरी, भालू, वानर, हिरण, गिद्ध और गिलहरी तक का संबंध भारतीय जनमानस में किसी ना किसी देवता से है। इन सब के निहितार्थ संभवत यही हैं कि व्यक्ति चाहे किसी भी देवता की उपासना करे, वह वहीं किसी न किसी प्राणी के संरक्षण में स्वतःलिप्त हो जाए। वह उस प्राणी में उस देवता के स्वरूप के दर्शन करें व उसके प्रति एक सम्मानजनक रवैये का प्रदर्शन करें।

मुख्य शब्द : जैव विविधता, हिंदू धर्म, प्राणी संरक्षण।

अश्विनी कुमार जोशी
सहायक आचार्य,
प्राणीशास्त्र विभाग,
मा ला वर्मा रा महाविद्यालय,
भीलवाड़ा, राजस्थान

प्रस्तावना

किसी देश की संस्कृति में अनेक पक्षों के साथ–साथ जैव विविधता का भी एक पहलू होता है। जीवों के जातीय, पारिस्थितिकीय पहलुओं के भी अपने सांस्कृतिक पक्ष होते हैं जो कि, जैव विविधता के पोषण में महती भूमिका निभाते हैं। यूं कहा जाए कि मानव समाज और संस्कृति से जीव जंतु इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि उनको पृथक करना नामुमकिन सा है। भारतीय संस्कृति व समाज में जीवों का समाकलन जिस प्रकार से है वह अपने आप में अद्वितीय है। हमारे जीवन मूल्यों में जीव संरक्षण को प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष रूप से सदैव प्राथमिकता में रखकर नई पीढ़ी में हस्तांतरित करने का प्रयास किया गया है। इसका प्रमाण यह है कि आज भी शाम होते ही हजारों की संख्या में तोते मंदिरों और उसके अहातों में रात्रि विश्राम करते हैं। मंदिरों की छतों पर या चौगानों में स्थित कबूतर खानों में सुबह होते ही सैकड़ों कबूतर अपना पेट भरने आ पहुचते हैं। हम आज भी किसी स्थान पर बैठी हुई गौमाता को उठाते नहीं है और श्राद्ध पक्ष में कौवे को पूर्वज का अवतार मानकर बुला–बुला कर खिलाते हैं। इन विचारों की संस्कृति में स्थापना यही सोच कर की गई है कि जीवों का संरक्षण सदैव हमारी प्राथमिकता में रहे और अब तो यह जैसे कि हमारे जीन्स में ही शामिल हो गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत पत्र को लिखने का उद्देश्य प्राचीन भारतीय साहित्य, पुराणों वेदों में प्राणी संरक्षण की मूल भावना की तलाश कर उसको आम जनता के सम्मुख इस प्रकार रखना है कि वह जैव विविधता से सहज ही एक जुड़ाव महसूस करें। इसका दूसरा उद्देश्य यह है कि व्यक्ति हमारे प्राचीन सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान करें और यह समझे कि किस प्रकार तकनीक से विहीन उस काल में भी समाज जैव विविधता संरक्षण की सोच रखा करता था और वर्तमान के इस काल में इसका ज्ञान व अनुप्रयोग अपरिहार्य सा प्रतीत होता है। इस पत्र का उद्देश्य यह भी है कि इस पत्र का अध्ययन करने के बाद शिक्षार्थी में समाज व लोक जन–जीवन में जैव विविधता से सम्बन्धित अन्य रीति–रिवाजों को जानने की उत्सुकता उत्पन्न होगी जो कि इस विषय पर हमारे ज्ञान को और समृद्ध करेगा।

मूल कथन

जिस प्रकार पारिस्थितिकी में किसी स्थान की जैविक–अजैविक समस्त वस्तुओं का समावेश हो जाता है उसी प्रकार हमारे धर्म ग्रंथ, पुराण, खंडकाव्यों और अन्य पुरातन साहित्य में कहीं न कहीं इस जैव विविधता का समावेश किया गया है और "अहिंसा परमो धर्मः" का उपदेश देने का प्रयास किया गया है। और

तो और इनका ही अनुसरण करते हुए भारत के राज्य चिन्ह अशोक स्तंभ पर भी जीवो को ही उकेरा गया है ताकि जैव विविधता के संरक्षण का विचार व्यक्ति के मस्तिष्क में चिरंतन जीवित रखा जा को ही उकेरा गया है ताकि जैव विविधता के संरक्षण का विचार व्यक्ति के मस्तिष्क में चिरंतन जीवित रखा जा सके। जीव जंतु और पक्षियों के स्वभाव की पहचान कर उपदेशात्मक दोहे व श्लोक लिखे गए हैं, जो बताते हैं कि किस जीव से क्या विचार ग्रहण करके किस प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है? वस्तुतः यह सब उनके बारे में भारतीय समाज व संस्कृति द्वारा दिया जाने वाला सम्मान ही है जो कि, उनका योगदान समझकर भावी पीढ़ियों को न केवल उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करता है वरन् एक सफल मानव जीवन जीने को भी प्रेरित करता है। संस्कृत में एक श्लोक है–

काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम् ।।

इसमें विद्यार्थी को सफलता के लिए आवश्यक गुण बताये गये हैं जो कि जीवों से ग्रहण किये गये हैं। उनमें कौअे के समान प्रयास, बगुले के समान ध्यान व श्वान के समान निद्रा धारण करने का उपदेश दिया गया है। प्रस्तुत आलेख में कुछ जीवो के बारे में बताने का प्रयास किया गया है जो कि भारतीय संस्कृति में इस तरह समाहित हैं, कि मानव समाज का ही एक भाग प्रतीत होते हैं। ये भी ध्यातव्य है कि इनमें से अधिकांश को साक्षात ईश्वर का स्वरूप मानकर हमारा समाज पूजा करता आया है।

गाय

गाय को भारतीय संस्कृति में माता का दर्जा दिया गया है और गौ माता कहा जाता है। "कामधेनु" का उल्लेख देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र मंथन के दौरान प्रकट होने का मिलता है जो कि सभी मवेशियों की जननी के रूप में मानी जाती है। भगवान कृष्ण का गोपालक स्वरुप सर्वविदित है। कृष्ण की मोहक छवि बांसुरी व गाय के साथ चित्रित की जाती रही है। गाय को ऋग्वेद में "सौभाग्य लाने वाली" के रूप में वर्णित किया गया है जबकि, यजुर्वेद में "गौहंता को दंडित किया जाने का आह्वान" राजा से किया गया है। गाय को पवित्र जानवर के रूप में मंदिरों में पालन किया जाने का इतिहास रहा है। श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को गौदान किया जाना शुभ माना जाता था। मंदिरों में बड़े दरवाजे गौपुर कहकर संबोधित किए जाते हैं जो कि गाय की पवित्रता का संकेत है। इसी प्रकार बैल को शक्ति और पुरुष सामर्थ्य का प्रतीक माना गया है। वेद की रचनाओं में देवताओं को "वृषभ" कहकर संबोधित किया गया है जो कि यहां बैल का परिचायक है। भगवान शिव का वाहन नंदी उनका प्रधान गण है व नंदी की स्थापना शिवालय में शिव के सम्मुख की जाती है। नंदी के स्पर्श के उपरांत शिवालय में प्रवेश करना एक प्रकार से उनकी अनुमति लेना है। दक्षिण के मंदिरों में नंदी के स्वयं के मंदिर हैं। तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर में नंदी की विशाल ग्रेनाइट की प्रतिमा है जिसमें शिव परिवार को नंदी के ऊपर विराजित दिखाया गया है।

शेर

शेर को भारतीय वन संरक्षण अधिनियम के प्रथम अनुसूची में रखा गया है। शेर को साहित्य में शक्ति और साहस के प्रतीक के रूप में वर्णित किया जाता है। भारत के राज्य चिन्ह के रूप में भी शेर को प्रस्तावित किया गया है। भगवान विष्णु ने हिरण्यकश्यपु को मारने के लिए अवतार शेर के रूप में ही लिया था। इसी प्रकार दुर्गा का स्वरूप भी सिंहवाहिनी के रूप में पूज्य है। दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य के आराध्य देव के रूप में भी शेर को माना जाता था। हम्पी में एक ही बड़ी चट्टान पर लक्ष्मी नरसिम्हा को उकेरा गया है। हिंदू देवी चित्रण में विष्णु–दुर्गा को शेर पर सवार हुए व महिषासुर का वध करते हुए दिखाया गया है।

बाघ

भारत के राष्ट्रीय पशु बाघ की संख्या भारत में कभी 50 हजार से 1लाख के मध्य हुआ करती थी परंतु आज उनकी संख्या 2000 से भी कम रह गई है। बाघ को शिव–दुर्गा का वाहन माना जाता है। इसे राहु का भी वाहन माना जाता है। दक्षिण भारत में भगवान अयप्पा को भी बाघ की सवारी करते चित्रित किया गया है। भगवान शिव को बाघ की छाल पर ध्यानस्थ दिखाया जाता है और उनका यह स्वरूप "व्याघ्रनाथेश्वर" कहलाता है। भारत में राजस्थान राज्य के भीलवाड़ा जिले के मांडल गांव में शाहजहाँ के समय से ही पुरूषों द्वारा नाहर नृत्य खेला जाता है जो कि अपने आप में अनूठा है।

वानर

हनुमान जिनकी पूजा अत्यंत श्रद्धा से हिंदू समाज अतीत से करता आया है, मूलतः कपि हैं। रामायण में रावण द्वारा सीता हरण कर लेने पर सीता माता का पता लगाने और उनको मुक्त कराने में वानरों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान था। हनुमान वानर स्वरूप व भगवान राम के परम भक्त थे। लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने पर उन्हें बचाने हेतु संजीवनी भी हनुमान ही लेकर आए थे। हनुमान पवनपुत्र और अमरता का वरदान प्राप्त ऐसे राम भक्त के रूप में है जिनका उल्लेख रामायण और महाभारत दोनों महान ग्रंथों में मिलता है। हनुमान को रामायण में प्राप्त विशिष्ट स्थान के कारण ही वानरों को हनुमान स्वरूप मानते हुए हिंदू समाज उनका पूजन करता है और संपूर्ण भारतवर्ष में अनेक ऐसे मंदिर है जहां सैकड़ों बंदरों को संरक्षण प्रदान किया जाता है।

गिद्ध

गिद्ध को यद्यपि लोग घृणित नजरों से देखते हैं क्योंकि यह मृत जानवरों का मांस खाता है परंतु ऐसा करके वह वातावरण को शुद्ध करने का कार्य भी करता है। रामायण में जटायु जो कि सीता माता के अपहरण के दौरान उनको बचाने के लिए रावण से भी युद्ध करता है, गिद्ध ही होता है और घायल होने के उपरांत भी राम और लक्ष्मण को सीता के बारे में बताने के बाद ही वह प्राण त्याग देता है।

सर्प

सर्प या नाग का शब्द भय का पर्याय है परंतु भारतीय संस्कृति में यह पूजनीय भी है। सृष्टि के संहारक देव भगवान शिव के गले में कोबरा एक आवश्यक गहने

के समान है। गणेश के पेट पर बेल्ट के समान सर्प उपस्थित है तो देवी दुर्गा सर्प को एक हथियार के रूप में प्रयोग कर चंड–मुंड का संहार करती है। भगवान कृष्ण के जीवन की विभिन्न घटनाओं से सर्पों की कथाएं जुड़ी हैं। बचपन में भगवान कृष्ण ने बाल लीला स्वरूप कालिया नाग का दमन किया था वही जब वासुदेव भगवान कृष्ण को गोकुल छोड़ने जाते हैं तो अंनत नामक सर्प ने उनकी छत्र स्वरूप बनकर रक्षा की थी। भगवान विष्णु की शैया एक सात फन वाला सर्प शेषनाग है जबकि समुद्र मंथन के दौरान वासुकी नामक सर्प का रस्सी के रूप में उपयोग कर मंथन का कार्य संपादित किया गया था। ऋग्वेद में वर्णित वृत्र नामक राक्षस जिसको साहित्य में सर्प स्वरूप ही बताया गया है, का विनाश इंद्र ने किया था। यह राक्षस अकाल का कारण माना गया था। राहु के शरीर का निचला हिस्सा सर्प का ही है।

हंस

हंस सौम्यता, स्निग्धता व श्रेष्टता का प्रतीक माना गया है। हंस के लिए कहा जाता है कि यह दूध में से पानी और दूध को अलग कर सकता है व इस प्रकार यह अच्छाई और बुराई को अलग करने के प्रतीक के रूप में प्रतिबिंबित होता है। यह सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा व विद्या की देवी सरस्वती का वाहन माना जाता है। कहते हैं कि यह पहले श्वेत–श्याम हुआ करते थे परंतु भगवान के आशीर्वाद से दुग्ध–धवल हो गए। राजकुमार नल की सहृदयता को हंस ने ही दमयंती को सुनाया था जो कि दोनों के विवाह हेतु प्रेरक बना। अभूतपूर्व आध्यात्मिक व्यक्तित्व वाले महापुरुषों को भारतीय संस्कृति में परमहंस की उपमा दी जाती है। रामकृष्ण परमहंस ऐसे ही एक व्यक्तित्व थे।

हाथी

हाथी को भारतीय संस्कृति व साहित्य में विशिष्ट स्थान हासिल है। किसी भी मांगलिक कार्य को करने से पूर्व भगवान गणेश का स्मरण किया जाता है। गणेश का सिर हाथी का है और संपूर्ण संपूर्ण धड़ मनुष्य का। हाथी के प्रति भारतीय समाज का सम्मानजनक रवैया गणेश के कारण ही है। हिंदू समाज में कोई भी मांगलिक कार्य गणेश की वंदना के बिना आरंभ नहीं होता। गणेश बुद्धिमता के भी प्रतीक हैं। गणेश का महत्वपूर्ण योगदान महाभारत लेखन में है, जहां कहते हैं कि महर्षि वेदव्यास ने भगवान ब्रह्मा से महाभारत लिखने के लिए लेखक मांगा। ब्रह्मा जी ने गणेश को यह कार्य करने हेतु कहा तब गणेश ने अपने दांत के अर्धांश का प्रयोग कर लेखन कार्य किया। पुराणों में हाथी का जिक्र धन की देवी मां लक्ष्मी के वाहन के रूप में आता है। गज पर विराजित या मध्य में लक्ष्मी और दोनों ओर गज के स्वरुप में गजलक्ष्मी का चित्रण हुआ है। कहते हैं कि समुद्र मंथन में निकले नवरत्नों में से "ऐरावत" नामक सफेद हाथी भी था जो कि इंद्र का वाहन है, उसे हाथियों का मूल पुरुष माना जाता है। "गजेंद्र मोक्ष" जो कि इन्द्रयुम्न नामक तमिल राजा के ऋषि अगस्त्य के शाप से गजरूप में पुनर्जन्म लेने व पुनः शापमुक्त होने से जुड़ा है, भी भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण भक्त कथा है। हाथी भारतीय पौराणिक साहित्य में शक्ति और पुरुषत्व का प्रतीक है। दक्षिण भारत के मंदिरों में देवस्थान–हस्ति रखने का प्रावधान है, जहाँ मंदिरों में हाथी पाले जाते हैं।इसके अलावा मंदिरों के बाहर हाथी की मूर्ति बनाने की परंपरा बहुत प्राचीन है।

भालू

रामायण में जामवंत भगवान राम की सेना के मुख्य सेनापति के रूप में वर्णित है। भगवान राम की सेना के वयोवृद्ध सदस्य जामवंत ने कहते हैं कि, समुद्र मंथन देखा और विष्णु का वामन अवतार भी। जामवंत ने हनुमान को उनकी शक्ति याद दिलाई थी और वे लंका जा पाए। कहते हैं कि जामवंत ने विष्णु के सभी कालों में जन्म लिया था। कृष्णकाल में कृष्ण से हारने पर अपनी पुत्री जामवंती का विवाह उन्होंने कृष्ण से किया था।

एंटीलोप

भारत में पाई जाने वाली अनेक एंटीलोप प्रजातियों में से नीलगाय और काले हिरण को सर्वाधिक पवित्र और सम्माननीय माना जाता है। एंटीलोप को वायु देव का वाहन माना जाता है क्योंकि ये तेज गति का प्रतीक है और उसका सींग भगवान शिव के हाथ में है ,जो यह बताता है कि भगवान शिव इसके द्वारा मस्तिष्क की स्थिरता व विचारों पर नियंत्रण रखते हैं। संस्कृत साहित्य में जिस कृष्ण मृग का जिक्र है वह भी एक एंटीलोप ही है। मध्यकाल में जब शिकार के कारण उनकी संख्या काफी कम हो गई तो 1485 ईस्वी में गुरु जांभोजी ने बिश्नोई समाज की स्थापना करते हुए कृष्ण मृग को एक पवित्र जानवर के रूप में इस समाज को सौंपा। विश्नोई समाज आज भी इनकी एक पवित्र पशु के रूप में मान कर रक्षा कर रहा है। इसे वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के शेड्यूल एक द्वारा संरक्षित किया गया है

हिरण

हिरण जंतु जगत में सबसे भोले और शांत जानवर के रूप में माने जाते हैं। यह एंटीलोप से सींगों में भिन्न होते हैं। इनके सींगों में हड्डी का केंद्रीय अक्ष नहीं होता है। इनका छाल और मांस हेतु जंगल में सर्वाधिक शिकार होता है। चीतल को सभी हिरणों की जातियों में सबसे पवित्र माना जाता है। यह स्वर्ण हिरण है जिसका जिक्र रामायण में आता है, जहां सीता राम से स्वर्ण मृग लाने को कहती है। राम उसके पीछे जाकर जब तीर चलाते हैं तो वह अपने मूल स्वरुप मारीच राक्षस में बदल जाता है और लक्ष्मण को बचाव हेतु पुकारता है। लक्ष्मण के बचाव हेतु जाते ही पीछे से रावण सीता का हरण कर लेता है। इसी प्रकार कहा जाता है कि भगवान शिव ने नेपाल के श्लेष्मांतक जंगल में पार्वती "वात्सल्येश्वरी" को पाने के लिए स्वर्ण मृग का स्वरूप लिया था।

गिलहरी

गिलहरी को भारतीय समाज में बहुत पवित्र माना जाता है व इसे मारा नहीं जाता। कहा जाता है कि भगवान राम व वानर लंका जाने के लिए जब सेतु बना रहे थे तो उस समय एक गिलहरी लोट–लोट कर अपने शरीर पर मिट्टी चिपकाती और उसे सेतु पर डालती। इस प्रकार वह इस पुण्य कार्य में अपना योगदान दे रही थी। उसे जब भगवान राम ने देखा तो अपने हाथ में लेकर

उसकी पीठ पर हाथ फिराया जिस से निर्मित तीन रेखाएं आज भी उसका उसकी पीठ पर दिखाई देती है।

जंगली सूअर

जंगली सूअर प्राय जंगल में रहता है और जब यह अपने बाहर निकले दांतो से जमीन खोदता है तो इसे मानसून के आगमन का प्रतीक माना जाता है। लगातार पोचिंग से इनकी 7 प्रजातियों में से भारतीय उपमहाद्वीप में केवल एक प्रजाति ही बची है। इसका वर्णन भगवान विष्णु के वराह अवतार के रूप में भी आता है। जब हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को समुद्र में धकेल दिया तब भगवान विष्णु ने ही वराह अवतार लेकर पृथ्वी को वापस बाहर निकाला और उसे समुद्र की सतह पर स्थापित किया। वराह का चित्रण सूअर के सिर वाले मानव के रूप में किया जाता है, जिसके साथ सदैव भूदेवी अर्थात पृथ्वी माता होती है। उदयगिरि के गुप्त मंदिर और महाबलीपुरम के वराह गुफा में इस स्वरूप का चित्रण किया गया है

बिल्ली

बिल्ली को "माता षष्टी" का वाहन माना गया है। षष्टी माता को पश्चिम बंगाल व महाराष्ट्र में पूजा जाता है और यह षष्टी तिथि का सूचक है। इनकी गोद में इनका पुत्र स्कंद होने से उनको स्कंदमाता भी कहा जाता है। मामल्लपुरम में ध्यानस्थ बिल्ली की मूर्ति बहुत ही सुंदर तरीके से चट्टान पर तराशी गई है।

बकरी

बकरी गरीब की गाय है। भारतीय संस्कृति में "अग्नि का वाहन" मानी जाती है और ऋग्वेद में इसे "सूर्य के पुत्र" का वाहन माना जाता है। हिंदू धर्म में राजा दक्ष को अज के स्वरुप में ही बताया गया है। राजा दक्ष द्वारा हवन में भगवान शिव को अपमानित करने के उपरांत जब शिव का गण वीरभद्र, दक्ष का सिर काटते हैं तो उन्हें उनके कटे सिर के स्थान पर बकरे का ही सिर लगाया जाता है। अक्सर धन के देवता कुबेर को भी अज के रूप में ही दिखाया जाता है। प्रकृति को बकरी के रूप में चित्रित करते हैं जिसके तीन रंग लाल, काला और सफेद इसके तीन गुणों को बताता है।

घोड़ा

घोड़े को प्राचीन समय से ही महत्वपूर्ण घरेलू जानवर के रूप में काम में लिया जाता रहा है परंतु प्राचीन भारतीय धार्मिक साहित्य में इसका उल्लेख अत्यंत सम्मानजनक रूप से किया जाता रहा है। भगवान विष्णु के अवतारों में "हयग्रीव" अवतार आधा मनुष्य व आधा घोडा स्वरुप ही है। इसी प्रकार समुद्र मंथन में निकले नवरत्नों में से एक "इच्छैश्रावस" नामक श्वेत अश्व था जिसके सात सिर थे और जो इंद्र का वाहन था। भगवान सूर्य का रथ सात घोड़ों द्वारा खींचा जाना सर्वविदित है और भगवान विष्णु का दसवां व अंतिम अवतार भी "कल्कि" के रूप में सफेद घोड़े पर ही होगा, ऐसा श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित है।

निष्कर्ष

यद्यपि यह विवरण केवल कुछ प्राणियों को उदाहरण के तौर पर लेकर लिखा गया है परंतु वास्तविक रूप से बहुत बड़ी संख्या में प्राणियों के प्रति सम्मान व सौहार्द भारतीय समाज व संस्कृति में देखा जाता है जिसका मूल उद्देश्य प्राणी मात्र के प्रति सम्मान व उसका संरक्षण करना है। जैव विविधता को जीवित ईश्वर स्वरूप मानने के उदाहरण भारत देश के अलावा और कहीं मिलने बहुत मुश्किल है। हम तो वृक्ष को भी जीवित मान कर, उसे देवता स्वरुप मानते आए हैं। राजस्थान में भगवान देवनारायण का उदाहरण है जहां संरक्षित क्षैत्र में किसी पशु को मारना तो दूर पेड़, काटना भी वर्जित है। हम तो हरियाली को भी देवी स्वरूप मानकर पूजा करते रहे हैं। कहते हैं कि भगवान कृष्ण की बहन योगमाया जिसे कंस ने दीवार पर दे मारा था, वहां से लुप्त होकर हरियाली देवी के रूप में गढवाल क्षेत्र में निवास करने लगी। इस प्रकार प्राणीमात्र के प्रति यह दृष्टिकोण हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इसका ज्ञान व पुनःस्मरण आज जैवविविधता क्षरण के युग की तुरंत आवश्यकता है। आने वाली पीढ़ी इनका स्मरण रखे व महत्व समझें, यह बहुत आवश्यक है। सुनने में व ग्रहण करने में शायद नई पीढ़ी को यह तर्कसंगत ना लगे लेकिन, इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि प्राणियों के प्रति सम्मानजनक रवैया जिस प्रकार हमारे पुराने साहित्य में है उसने एक हद तक जैव विविधता के संरक्षण में मुख्य भूमिका निर्वहन की है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Gupta, S.K.(1983) Elephant in Indian Art And Mythology,Abhinav Publication, New Delhi.*
2. *Krishna, N. (2010). Sacred Animals of India.Penguin Books India Pvt. Ltd, New Delhi.*
3. *Ramakrishnan,P.S.(2008). The Cultural Cradle of Biodiversity National Book Trust,India,New Delhi*
4. *श्रीमद्भागवत महापुराण, गीता प्रेस,गोरखपुर*
5. *श्रीमद्वाल्मिकी रामायण, गीता प्रेस,गोरखपुर*
6. *श्री वेदव्यास कृत महाभारत, गीता प्रेस,गोरखपुर*
7. *अवतार कथा अंक, कल्याण (2007),गीता प्रेस, गोरखपुर*